अध्याय 16

अन्तिम शब्द

एक पत्र और प्रबन्ध के मध्य यह अन्तर है कि पत्र व्यक्तिगत बात की ओर झुकाव रखता है जबकि प्रबन्ध अधिक सामान्य बात की ओर झुकाव रखता है। कुछ नया नियम पत्र - उदाहरण के लिए, इब्रानियों, याकूब और 1 यूहन्ना - एक प्रबन्ध की सीमा के निकट हैं जबकि अन्य पुस्तकें व्यक्तिगत पत्रों के रुप में हैं।

पहला कुरिन्थियों एक पत्र है; यह सम्पूर्ण पत्र व्यक्तिगत पत्र है। पौलुस उन भाइयों को लिख रहा है जिन्हें वह जानता है और जिनसे वह प्रेम करता है। कुरिन्थ के लोगों के साथ ये व्यक्तिगत सम्बन्ध उस समय प्रकट होते हैं जब अपने पत्र में वह उन्हें नमस्कार कहता है।

जब पौलुस अपने इस पत्र में अन्त की ओर एक नरम विदाई की ओर बढ़ा तब उसने कुछ अनदेखी बातों पर भी ध्यान दिया। किसी एक वाक्य पर अधिक बात न करते हुए भी कुछ आयतों में कुछ शीर्षकों पर विशेष ध्यान दिया गया। अध्याय 16 में पौलुस ने जब अपनी बात को संक्षेप में रखा तो यह बाद के वंश के उन लोगों के लिए निराशाजनक था जो उसके पीछे चलना चाहते थे और उसके सम्बन्धों की खोज करना चाहते थे फिर भी हम इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि कुरिन्थ के लोगों के पास उन सूचनाओं के स्त्रोत थे जिन्हें पौलुस ने इन मामलों में सरलता से लिया। जिसके कारण उसे किसी प्रकार के विस्तृत विवरण में जाने की आवश्यकता नहीं थी।

पवित्र लोगों के लिये किया गया चन्दा (16:1-4)

1अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलातिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। 2सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े। 3और जब मैं आऊँगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियाँ देकर भेज दूँगा कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचा दें। 4यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएँगे।

आयत 1. जब पौलुस पत्र के अन्त के निकट जाने लगा तब उसने एक बार फिर **अब उस विषय में** नामक सूत्र का प्रयोग किया। कुरिन्थ की कलीसिया से जो पत्र पौलुस ने प्राप्त किया उसमें उपयुक्त रुप से तपस्वी जीवन-शैली, विवाह में

लैंगिक सम्बन्ध, सामाजिक अवसरों पर मूर्तियों की पहचान और आत्मिक वरदानों के सही प्रयोग के विषय में अनेक प्रश्न थे। यह निश्चित नहीं है कि क्या भाइयों ने मुर्दों के पुनरुत्थान पर भी किसी प्रकार का प्रश्न पूछा हो परन्तु पौलुस ने उस विषय पर भी सम्बोधित करने की आवश्यकता को देखा।

अगर "अब उस विषय में" वाक्यांश सदैव उन प्रश्नों का परिचय देता है जो कि कुरिन्थ के लोगों ने पौलुस के सम्मुख एक औपचारिक पत्र में रखे तो यहूदिया के गरीबों के लिए जो चन्दा वह एकत्रित कर रहा था उसके साथ कलीसिया के जुड़े होने के महत्व का यह वाक्यांश सुझाव देता है। उसी प्रकार "अब उस विषय में" कहने से पौलुस ने एक कठोर निर्देशक बनने का प्रयास नहीं किया। जब वह निर्देश देने और चन्दे के विषय में सहयोग देने की बात को जारी रखता है तब उसने एक नया विषय आरम्भ करने के लिए 16:1 में वाक्यांश को दोहराया।

कुछ ऐसे मामले थे जिनमें स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। सम्भावित रुप से कुरिन्थ के लोग विचार कर रहे होंगे कि यह चन्दा किस प्रकार एकत्रित किया जाएगा। वे किस प्रकार अपना अनुदान यरूशलेम भेज पाएँगे? जब पौलुस के आलोचक उस पर दोष लगाते हैं कि वह व्यक्तिगत लाभ के लिए यह चन्दा एकत्रित कर रहा है तो उन्हें वे उत्तर दे पाएँगे इसकी क्या गारन्टी है? फिर भी कुरिन्थ में और अन्य स्थानों में विभिन्न वस्तुओं के प्रबन्धन की आवश्यकता थी और पौलुस के जीवन का यह समय चन्दा एकत्रित करने की योजना में खर्च हुआ। यह उसके लिए कोई एक तरफ़ा छोटी बात नहीं थी।

पवित्र लोगों के लिए किए जाने वाले चन्दे के विषय में पौलुस की चिन्ता उसके स्वयं के और यरूशलेम की कलीसिया में कुछ "खम्भों" (गलातियों 2:9) के बीच एक बातचीत की ओर चली जाती है। उनकी सभा लगभग छः वर्ष पूर्व हुई थी। उसके साथ-साथ यरूशलेम के अगुवे इस बात के लिए चिन्तित थे कि गरीबों की सुधि ली जाए (गलातियों 2:10)। अपने पहले अनुभव से पौलुस, यहूदिया में गरीबी की मार से पीड़ित मसीही लोगों की आवश्यकताओं के विषय में जानकारी रखता था। अपने आरम्भिक दिनों में कलीसिया विभिन्न स्रोत उपलब्ध करवाने में बहुत आगे निकल गई जिससे कि कलीसिया का कोई सदस्य भूखा न सोए (प्रेरितों के काम 2:45; 4:34, 35)। यरूशलेम की ओर पौलुस की दूसरी यात्रा (दमिश्क के मार्ग पर मसीह के साथ हुए सामने के समय से ही) इस उद्देश्य के लिए थी कि शहर में रहने वाले यहूदी मसीही लोगों की सहायता (प्रेरितों के काम 11:29, 30) करने के लिए धन-राशि पहुँचाई जा सके और यह राशि अन्यजाति भाइयों से प्राप्त की जा सके। प्रेरित उसी समय से अपने आचरण में कार्यशील था जब उसने यरूशलेम में परोपकार करने के लिए योजना बनाई थी, जिसे उसने अपनी तीसरे मिशनरी यात्रा के आरम्भ में ही लागू करना आरम्भ कर दिया। जैसा कि पौलुस अपने अन्य पत्रों में "चन्दे" के विषय में वर्णन करता है, मात्र 16:1 में ही वह इसे λογεία *(लोगिया)* नाम से पुकारता है; यह एक ऐसा शब्द है जो कि प्रायः सांसारिक साहित्य में पवित्र दानों के लिए प्रयोग में लिया जाता है।[1] प्रेरित के द्वारा शब्दों का चुनाव यह सुझाता है कि इन प्रयासों में किस

प्रकार के महत्व पर उसने ध्यान दिया। जो चन्दा उसने एकत्रित किया उसे बाद में वह "पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने" (2 कुरिन्थियों 8:4; KJV) और "इस दान के काम" (2 कुरिन्थियों 8:6) के रुप में बताता है।

यरूशलेम और यहूदिया में गरीब पवित्र लोगों की राहत के लिए इस प्रकार के बड़े चन्दे को एकत्रित करने के पीछे पौलुस का उद्देश्य त्रिपक्षीय था। पहला, ज़रुरतमन्द लोगों के लिए तरस रखने के विचार ने उसे खींचा - विशेष रुप से अपने स्वयं के लोगों के लिए वह चिन्ता रखता था (देखें रोमियों 9:3)। कठिनाई के साथ यह आश्चर्य की बात है कि यहूदियों के मुख्य शहर में गरीबी अधिकता से थी। यरूशलेम, अधिक उद्योग अथवा उपजाऊ ज़मीन के बिना एक धार्मिक केन्द्र था। अनेक यहूदी इसके धार्मिक इतिहास के कारण इस शहर में रहने की तीव्र इच्छा रखते थे। वे लोग कभी-कभी बिना किसी आर्थिक सहयोग के और जीविका के लिए स्थायी यहूदी निवासियों की उदारता पर निर्भर होकर यात्रा करते थे। दूसरा, प्रेरित का यह मानता था कि अन्यजाति लोगों के लिए यह उपयुक्त था क्योंकि वे इस्राएल की आत्मिक आशिषों में भागीदार थे जिससे कि उन्हें यहूदी विश्वासियों की भौतिक आशिषों में भागीदार बनाने के द्वारा उनके साथ आशिषों का आदान-प्रदान किया जा सके (रोमियों 15:27)।

पौलुस का तीसरा उद्देश्य विस्तृत रुप से अनुमान के अनुसार है परन्तु सम्भावित रुप से यह उसके लिए अन्य दो की तुलना में अधिक आवश्यक था। वह यहूदी अधिकार के अन्तर्गत कलीसियाओं और प्राथमिक रुप से अन्यजाति विश्वासियों से निर्मित कलीसियाओं के बीच बढ़ते हुए तनाव को देख सकता था। यहूदी मसीही लोगों में जातीय सम्बन्धी मज़बूत पहचान का भाव देखा जा सकता था जो कि सम्भावित रुप से अधिक राष्ट्रवादी था। यह समझा जा सकता है कि वे परमेश्वर से प्राप्त अनुग्रह के स्तर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। कुछ लोग न केवल स्वयं को यहूदी मसीही मानते थे परन्तु इसी के साथ फ़रीसी यहूदी मसीही भी मानते थे (प्रेरितों के काम 15:5)। उन्होंने यह माँग की कि अन्यजाति विश्वासी मसीही बनने से पहले यहूदी बनें। अपने भाग में पौलुस ने यह निश्चय किया कि अन्यजाति और यहूदी लोग मसीह की ओर मुड़ जाएँ, आज्ञाकारिता का जीवन जीएँ और सही तरीके से समान आधार पर परमेश्वर के वायदों में भागीदार हों (रोमियों 2:9-11; 10:12)। एक बढ़ती हुई फ़ूट का अर्थ यही होता कि एक यहूदी कलीसिया और अन्यजाति कलीसिया ने अपना-अपना मार्ग पकड़ लिया। इस प्रकार का विचार पौलुस के लिए घृणित था।

प्रेरित की योजना यह थी: सम्पूर्ण रुप में विश्व में अपनी पहचान रखने वाले अन्यजाति विश्वासी, यहूदिया और यरूशलेम में रहने वाले निस्सहाय मसीही लोगों को भौतिक राहत देने में योगदान दें। यह आर्थिक सहायता वे स्वयं अपने हाथों से अन्यजाति विश्वासी लोगों के हाथों से लें; यहूदी और अन्यजाति विश्वासी आमने-सामने भेंट करें। इस प्रकार की भेंट यहूदी विश्वासियों के मध्य कृतज्ञता को उत्पन्न करेगी और अन्यजाति विश्वासी उस अंगीकार से प्रभावित होंगे जिसमें वे यहूदिया के लोगों के साथ भागीदार होते हैं। पौलुस का यह

मानना था कि अन्यजाति भाइयों के द्वारा की गई इस प्रकार की भलाई का संकेत, यहूदी और अन्यजाति मसीही लोगों के बीच अच्छे सम्बन्धों का निर्माण करेगा।

इस प्रथम पत्र में पौलुस ने कुरिन्थ में रहने वाले अपने मित्रों को स्मरण करवाया कि इस प्रयास में गलातिया के मसीही लोग उसका सहयोग कर रहे थे। उपयुक्त रुप से उसने धन एकत्रित करने का काम उसी समय से आरम्भ कर दिया था जब वह इफ़िसुस जाने के लिए गलातिया से होकर गुज़रा (प्रेरितों के काम 18:23)। 2 कुरिन्थियों 8 और 9 में वह कुरिन्थ की कलीसिया को उत्साहित करना जारी रखता है कि वे उदारता से दें। प्रेरित मकिदुनिया की कलीसियाओं को उदाहरण के रुप में (2 कुरिन्थियों 8:1, 2) सामने रखता है। कुछ महीनों के पश्चात जब पौलुस कुरिन्थ में अपने शरद के दिन बिता रहा था (1 कुरिन्थियों 16:6; देखें प्रेरितों के काम 20:2, 3), तब उसने रोमियों का पत्र लिखा; इसमें उसने फिर से चन्दा एकत्रित करने के बारे में लिखा (रोमियों 15:26)। प्रेरितों के काम 20:4 में पौलुस के साथ यात्रा करने वाले उसके साथियों की सूची को आसानी से उस समय समझा जा सकता है जब पाठक इस प्रकार के चन्दे के बारे में जान लेता है जबकि इसके लिए प्रेरितों के काम (प्रेरितों के काम 24:17) में मात्र एक ही स्पष्ट सन्दर्भ देखने को मिलता है।

पौलुस के द्वारा किए गए चन्दे के पीछे यह मन था कि इसके द्वारा एकता लाई जा सके, परन्तु लूका के विवरण के अनुसार यरूशलेम में जब पौलुस यह भेंट लेकर आया तब उसके प्रयासों के लिए उसका स्वागत इस प्रकार नहीं किया गया जिस प्रकार किया जाना चाहिए था (प्रेरितों के काम 21:17-30)। प्रेरितों के काम 21:20, 21 में दिया गया कथन यह प्रकट करता है:

> हे भाई तुम ही देखो कि यहूदियों में विश्वास करने वाले लोगों में किस प्रकार के हज़ारों लोग हैं जो विश्वास करते हैं *और वे व्यवस्था के प्रति जोश रखते हैं*; और उन्हें तुम्हारे बारे में बताया गया है कि तुम सब अन्यजातियों के बीच रहने वाले सब यहूदी लोगों को सिखाते हो कि वे मूसा को छोड़ दें, और यह कहते हैं कि वे अपने बच्चों का खतना न करें और न ही परम्पराओं के अनुसार चलें। (इस पर बल दिया गया है।)

लूका ने सम्भावित रुप से चन्दे के विषय में कम कहना उचित समझा क्योंकि यह चन्दा उस एकता के विषय में असफल रहा जिसकी आशा पौलुस ने की थी। यरूशलेम में मसीही यहूदी, खतनारहित भाइयों को स्वीकार करने में उत्साहित नहीं थे, यहाँ तक कि जब वे एक उदारपूर्ण भेंट लेकर आ रहे थे।

आयत 2. कुरिन्थ के लोग, **सप्ताह के पहले दिन...कुछ अपने पास रख छोड़ा करे**, ऐसा क्यों किया जाना चाहिए? पौलुस मनमाने ढंग से यह व्यवस्थित नहीं करता कि "सप्ताह के पहले दिन" अपने पास चन्दा रख छोड़ा करें। सुसमाचार की चारों पुस्तकों का विवरण यह बताता है कि यह सप्ताह का प्रथम दिन था जब यीशु की कब्र ख़ाली पाई गई। सप्ताह के उस दिन के पश्चात यीशु फिर से अपने

प्रेरितों से मिला (यूहन्ना 20:26)। कलीसिया के आरम्भिक दिनों से ही मसीही लोग सप्ताह के प्रथम दिन आराधना करने के लिए एकत्रित होते थे (प्रेरितों के काम 20:7)। "कलीसिया में" (जैसा कि 1 कुरिन्थियों 14:35 में दिया गया है) कुरिन्थ के मसीही लोगों के व्यवहार के बारे में जब पौलुस बात करता है तब वह लगभग निश्चित रुप से सप्ताह के प्रथम दिन ही मंडली के बारे में लिखता था। इसमें कोई संदेह नहीं कि सप्ताह का प्रथम दिन एक ऐसा विषय है जिसके बारे में यूहन्ना ने "प्रभु के दिन" (प्रकाशितवाक्य 1:10) वाक्यांश का प्रयोग किया। सप्ताह के प्रथम दिन मंडली का एकत्रित होना कलीसियाई विश्वास के प्रति इस बात की गवाही देता है कि यीशु की कब्र ख़ाली थी।

पौलुस और उसके पाठक यह जानते थे कि कलीसिया के लिए यह परम्परा थी कि प्रत्येक रविवार को वे लोग एकत्रित हों। अगर प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित यह निर्देश देता कि वे अपनी सुविधा के अनुसार अपने घर में एक भेंट एक तरफ़ कर दें तो सप्ताह के प्रथम दिन का महत्व निष्फल हो जाएगा। जैसा कि पौलुस चाहता था कि जब वह आए उस समय किसी प्रकार का चन्दा एकत्रित करने का काम नहीं किया जाए, इसे समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि प्रत्येक व्यक्ति चन्दे में उस समय डाले जब आराधना के लिए कलीसिया एकत्रित हो। जब पौलुस वहाँ की कलीसिया में पहुँचा तब उसने वह धन प्राप्त किया और इसे यरूशलेम में भेज दिया।

यह ध्यान देने योग्य है कि पौलुस ने यह नहीं कहा कि प्रत्येक विश्वासी को कितना देना है। विश्वासियों के लिए यहाँ पर अथवा नया नियम में किसी अन्य निर्देशों में दसवांश के बारे में संकेत नहीं दिया गया। ऐसा लगता है कि प्रत्येक विश्वासी अथवा विश्वासी परिवार को व्यक्तिगत रुप से यह निश्चय करना था कि एक सही राशि क्या होनी चाहिए। हो सकता है कि कोई व्यक्ति यह सोचे कि मसीही दान के लिए दसवांश एक अच्छी शुरुआत है परन्तु यह मात्र एक अनुमान था।

आयत 3. ऊपरी तौर पर पौलुस स्वयं यहूदिया जाने की योजना नहीं बना रहा था। वह उस व्यक्ति को **यरूशलेम भेजना** देगा जिसे भेंट लेकर जाने के लिए कुरिन्थ के लोग चुनें। पौलुस इन प्रतिनिधियों के साथ विवरण से भरा हुआ एक पत्र लिखेगा जिससे कि यरूशलेम की कलीसिया इस उदारता के पीछे के स्रोतों और उद्देश्यों को जान सकें। उसने निश्चित समय नहीं बताया कि वह कुरिन्थ में उनसे भेंट कब करेगा; परन्तु उसकी योजना सम्भावित रुप से कुरिन्थ से सीधा रोम जाने की थी फिर अपनी समय-सारणी में बाद में वह चाहे परिवर्तन ही क्यों न कर ले। ऐसा प्रकट होता है कि बाद की घटनाओं के कारण इफ़िसुस से कुरिन्थ की ओर उसने बिना योजना के यात्रा की जिसका वर्णन प्रेरितों के काम (देखें 2 कुरिन्थियों 2:1) में नहीं दिया गया। एक वर्ष अथवा इसके बाद जब उसने मकिदुनिया से 2 कुरिन्थियों लिखा तब उसके आने के समय में चन्दे के बारे में ध्यान देने के लिए प्रेरित उनसे निरन्तर आग्रह करता है (2 कुरिन्थियों 9:3-7)।

मकिदुनिया की कलीसियाओं से भेंट करने के बाद जब वह कुरिन्थ पहुँचा

तब सम्भावित रुप से पौलुस का यह मन रहा कि वह रोम की ओर बढ़े। अगर ऐसा था तो उसने फिर से अपनी योजना में कुछ परिवर्तन किया और कुछ यहूदियों के द्वारा, सम्भावित रुप से यहूदीवादी मसीही लोग जब उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे (प्रेरितों के काम 20:3) तब उसने कुरिन्थ से सीधा सीरिया की यात्रा करने का निश्चय किया। 1 कुरिन्थियों लिखने के बाद उसने एक से अधिक बार अपनी यात्रा की योजनाओं में परिवर्तन किए। अन्त में पौलुस, कुरिन्थ में शरद ऋतु का समय बिताने के बाद और चन्दा एकत्रित करने के बाद मकिदुनिया से होते हुए यरूशलेम की ओर चला गया। अपने साथ किसी को साथ ले कर जाना उसने स्मरण रखा जिससे कि कोई उस पर यह दोष न लगाए कि वह उस धन-राशि का उपयोग स्वयं के लिए कर रहा है (प्रेरितों के काम 20:3, 4)।

आयत 4. पौलुस यह नहीं जानता था कि आगे क्या होगा फिर भी उसने कुरिन्थ की भेंट के साथ ही यरूशलेम की ओर जाने की इच्छा व्यक्त की (16:4)। उसकी योजना पूरी नहीं हुई थी; यह परमेश्वर निश्चय करेगा कि उसे इस चन्दे के साथ जाना चाहिए अथवा उसे किसी अन्य दिशा में जाना चाहिए (16:6)। **यदि यह उचित हुआ** वाक्यांश (ἐὰν δὲ ἄξιον ᾖ, *एन डी एक्सिय ई)* के साथ प्रेरित सम्भावित रुप से अनपेक्षित घटनाओं को स्वीकृति दे रहा था; परन्तु सम्भव है कि उसके मन में कुछ और बात हो। वह यह सुझाव दे सकता था कि अगर यह चन्दा एक राशि तक पहुँच जाए तो इस समय उसकी उपस्थिति की आवश्यकता पड़ेगी; नहीं तो कोई और व्यक्ति भी उसे प्राप्त कर सकता है। अगर चन्दे की राशि के विषय में यह निश्चय नहीं किया जा सकता कि यह उसके लिए "उचित" है कि वह उस राशि साथ जाए तो यह कल्पना करना कठिन है कि प्रेरित ने किस प्रकार की अपेक्षा की होगी जिससे कि उस निश्चय को पूरा किया जा सके। वह उपस्थित हो अथवा न हो पौलुस ने अन्यजाति लोगों से यह अपेक्षा की कि वे यरूशलेम के मसीही लोगों तक उस भेंट को पहुँचाने में उसके साथ रहें। आमने-सामने के मुकाबले में, उदारता और कृतज्ञता के साथ पौलुस ने अन्यजाति परिवर्तन प्राप्त लोगों के प्रति यहूदी विरोधों को शान्त करने की आशा की।

उसके प्रति मित्र भाव रखने वाले लोगों के प्रति मित्र के रुप में पौलुस ने अपने पाठकों को अपनी यात्रा की योजनाओं के बारे में बताया। सम्भावित रुप से अन्य उद्देश्यों के साथ इस यात्रा के पीछे उसका उद्देश्य, मकिदुनिया में विशाल अन्यजाति कलीसियाओं से यरूशलेम के गरीब मसीही लोगों के लिए चन्दे में कुछ और भाग जोड़ने का था; परन्तु अपनी यात्रा की योजना में उसने कुरिन्थ को भी शामिल कर लिया।

भेंट करने के लिए एक योजना (16:5-9)

5मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा, क्योंकि मुझे मकिदुनिया होकर जाना ही है। 6परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहाँ ही ठहर जाऊँ और शरद ऋतु

तुम्हारे यहाँ काटूँ, तब जिस ओर मेरा जाना हो उस ओर तुम मुझे पहुँचा देना।
[7]क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है कि
यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा। [8]परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक
इफिसुस में रहूँगा, [9]क्योंकि मेरे लिये वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है,
और विरोधी बहुत से हैं।

आयत 5. पूर्व में 4:19 में उनसे भेंट करने के बारे में पौलुस ने उन्हें बताया। अब उसने उन्हें बताया कि वह इफ़िसुस से निकल कर **मकिदुनिया से होता हुआ** उत्तर और पश्चिम को जाएगा जिससे कि वहाँ की कलीसियाओं से भेंट कर सके। इसके बाद वह कुरिन्थ के लोगों से भेंट करेगा। मकिदुनिया एक महत्वपूर्ण रोमी प्रान्त था जो यूनानी प्रायद्वीप तक फैला हुआ था। थिस्सलुनीके और फ़िलिप्पी जैसे महत्वपूर्ण शहर पूर्वी ऐजियन की ओर तक सीमा रखते थे।

1 कुरिन्थियों लिखने के बाद घटनाओं का जब विवरण दिया गया तब प्रेरित ने यात्रा के विषय में जो योजनाएँ बनाई थी उनमें उसने अनेक परिवर्तन किए। एक बिन्दु पर उसने पहले कुरिन्थ जाने का निश्चय किया और फिर वहाँ से मकिदुनिया जाना चाहा (2 कुरिन्थियों 1:15, 16)। जब वह इफ़िसुस में था तब हो सकता है कि एक उपयुक्त अवसर आया हो अथवा हो सकता है कि कुरिन्थ की कलीसिया में आन्तरिक अशान्ति की बात उस तक पहुँची हो। परिस्थितियाँ स्पष्ट नहीं हैं परन्तु कुरिन्थ के नाम अपने दूसरे पत्र में (2 कुरिन्थियों 2:1-3) दिया गया सन्दर्भ संकेत देता है कि उसने इफ़िसुस से तुरन्त कुरिन्थ जाने की और फिर वहाँ से वापस इफ़िसुस आने की तैयार की। कुरिन्थ की यात्रा उसकी अपेक्षा के विपरीत थी (2 कुरिन्थियों 2:1, 2; 12:21)। उसने वहाँ एक निराशाजनक स्वागत का अनुभव किया और कलीसिया के व्यवहार से दुखी हुआ। इफ़िसुस से जाने के लिए विवश होकर (प्रेरितों के काम 20:1) प्रेरित, मकिदुनिया के मार्ग से होकर कुरिन्थ जाने के अपने मूल विचार की ओर लौट आया। पौलुस के जीवन में यह एक उग्र समय था। इल्लुरिकुम, (रोमियों 15:19) जो कि यूनानी प्रायद्वीप के एड्रियाटिक की तरफ़ पश्चिमी दिशा की ओर लातिनी भाषी क्षेत्र है वहाँ हो सकता है कि इस समय उसने भ्रमण करना चाहा हो।

आयत 6. उसके द्वारा प्रयोग में लिए गए कृदंत τυχόν (*टूखोन*, "सम्भव है") से जानकारी मिलती है कि पौलुस की योजनाएँ जाँच के तौर पर थी। प्रभु जिस प्रकार का भी द्वार ख़ोले उसके लिए उसे तैयार रहना था। निकटतम भविष्य के लिए उसे मकिदुनिया से "होकर जाना" था परन्तु वापस गुज़रते समय उसने कुरिन्थ में **ठहरने** की योजना बनाई, सम्भावित रुप से उसने **उनके साथ शरद के मौसम** में रुकना चाहा। शरद ऋतु में भूमध्य-सागर पर यात्रा करना असम्भव था। जहाज़ छोटा था और मौसम उग्र हो सकता था। बाद के एक अवसर में कुछ लोग पौलुस के साथ एक जहाज़ से यात्रा कर रहे थे उस समय उनका जहाज़ उस समय टूट गया जब सूबेदार और कप्तान ने समुद्र के किनारे यात्रा करने के लिए जहाज़ को उतार दिया जब वे लोग प्रेरित को रोम लेकर जा रहे थे (प्रेरितों के

काम 27:9, 11)। मकिदुनिया से होकर जाने के *बाद* कुरिन्थ के लोगों से भेंट करने की पौलुस की योजना, ऊपरी तौर पर महसूस की गई। उसने तीन महीने यूनान में, उपयुक्त रुप से कुरिन्थ में बिताए और सम्भावित रुप से शरद ऋतु के समय में बिताए (प्रेरितों के काम 20:3)। कुछ ही वर्षों में प्रेरित ने इफ़िसुस से 1 कुरिन्थियों, मकिदुनिया से 2 कुरिन्थियों और कुरिन्थ से रोमियों लिखा। जितना हम जानते है उसके अनुसार उसके जीवन का कोई और समय उसके इस समय के साहित्यिक उत्पाद के साथ तुलना के रुप में देखा नहीं जा सकता।

कुरिन्थ के लोगों से आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए सब प्रकार के विरोधों के बाद भी (1 कुरिन्थियों 9:15-18; 2 कुरिन्थियों 12:13, 14) प्रेरित पर्याप्त रुप से यात्रा के खर्चे को स्वीकार करने और इसके लिए निवेदन करने के मन के साथ देखा जा सकता है। उसने यह सुझाया कि **जिस ओर वह जाना चाहता है उस ओर कलीसिया उसे पहुँचा देगी**। कुरिन्थ के लोग उसे किसी प्रकार का वेतन नहीं दे पाए परन्तु वे लोग उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सहायता कर पाए थे जब वह उन स्थानों की ओर यात्रा करता था जहाँ पर सुसमाचार का प्रचार नहीं किया गया था। भविष्य में सुसमाचार-प्रचार के लिए लक्ष्य के रुप में प्रेरित ने अपने मन में रोम और स्पेन को रखा (प्रेरितों के काम 19:21; रोमियों 15:24)।

आयत 7. अपनी यात्रा के मध्य, मकिदुनिया की कलीसियाओं में ठहराव की तुलना में पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया में एक तुरन्त के ठहराव से सन्तुष्ट नहीं था। वह कुरिन्थ के मसीही लोगों के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करना चाहता था। सम्भावित रुप से कुरिन्थ में कुछ लोगों ने प्रेरित से बलपुर्वक निवेदन किया कि वह तुरन्त वहाँ आए; परन्तु उसने उनसे कहा, **क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता**। एक उतावली भेंट से जटिल घटनाक्रम की सम्भावना बन गई। जिस प्रकार के घटनाक्रम हुए उनके अनुसार हो सकता है कि पौलुस ने अब तक जितना कार्य किया उससे बढ़कर, एक लम्बे समय तक कुरिन्थ के लोगों से दूर रहने के द्वारा उसने अच्छा काम किया। 2 कुरिन्थियों 2:1, 2, में उसने "उदासी से पूर्ण" यात्रा के बारे में बताया उससे नहीं लगता कि वह शहर में आरम्भ के डेढ़ वर्ष तक ठहरा (प्रेरितों के काम 18:11) होगा। लूका ने सम्भावित रुप से पौलुस के मिशनरी कार्य में विभिन्न घटनाओं का वर्णन जानबूझकर नहीं किया जिनका परिणाम मूल्यहीन था। प्रेरितों के काम का लेखक अगर यह जानता कि कुरिन्थ की भेंट पौलुस के लिए "उदासी से पूर्ण" होगी तो वह इसके किसी भी प्रकार के वर्णन को पहले ही हटा देता।

आयत 8. कुरिन्थ में कलीसिया की भलाई से बढ़कर विचार करने के लिए पौलुस के पास कार्य था। जब उसने 1 कुरिन्थियों लिखा तब वह इफ़िसुस शहर में काम कर रहा था जिसकी तुलना कुरिन्थ के आकार और व्यापारिक महत्व से की जा सकती थी। उसने यह वर्णन नहीं किया कि पिन्तेकुस्त के पर्व के समय से पहले वह कितने समय तक वहाँ रहेगा अथवा वह **पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में** क्यों रहना चाहता था। प्रेरितों के काम में उपलब्ध विवरण अनेक उद्देश्यों के बारे

में सुझाव देता है।

पहला, पौलुस ने उपयुक्त रुप से अन्यजाति में बढ़ते हुए अपने लोगों और अपरिवर्तित यहूदियों के बीच विरोध देखा (देखें 2 कुरिन्थियों 1:8)। रणनीति के समय में यह उसके लिए अच्छा था कि एक दिए गए क्षेत्र में काम से स्वयं हटे और कलीसिया का काम उन योग्य अगुवों के हाथों में सौंप दे जिन्हें उसने प्रशिक्षित किया था। समय महत्वपूर्ण था। इफ़िसुस में उसका काम समाप्त होने लगा परन्तु वह इतनी शीघ्रता से वहाँ से जाना नहीं चाहता था।

दूसरा, यहूदी पर्व पिन्तेकुस्त, फसह के बाद पचास दिन बाद आता था। यह आरम्भिक मध्य-मई में पड़ता था। अगर पौलुस मध्य-मई में इफ़िसुस छोड़ देता तो इससे मकिदुनिया की कलीसियाओं की ओर यात्रा करने के लिए और कुरिन्थ में शरद ऋतु बिताने के लिए लगभग एक वर्ष मिल जाता। भूमध्य-सागर का यातायात उसके बाद के वर्ष में पिन्तेकुस्त से पहले यरूशलेम की ओर यात्रा करने के लिए आरम्भ हो जाता। पिन्तेकुस्त एक मुख्य पर्व था जब सम्पूर्ण रोमी जगत से यहूदी लोग यरूशलेम में एकत्रित होते थे; परन्तु यहूदी मसीही लोगों के लिए यह एक विशेष आकर्षण का दिन था क्योंकि यह सुसमाचार के प्रथम प्रचार और कलीसिया के जन्म का वार्षिकोत्सव था (प्रेरितों के काम 2:1, 41)। पिन्तेकुस्त पर जब पौलुस यरूशलेम पहुँचा तो उसने यह अपेक्षा रखी कि वहाँ पर यहूदी मसीही लोगों का एक बड़ा दल उपस्थित होगा (प्रेरितों के काम 21:20)।

आयत 9. कुरिन्थ में कुछ सप्ताह की भेंट के लिए, इफ़िसुस छोड़ने के प्रति पौलुस की अनिच्छा का तीसरा कारण यह था कि इफ़िसुस में उसने सफ़लतापूर्वक कार्य किया जिसके कारण परिस्थितियाँ यह माँग कर रही थी कि वह वहाँ कुछ और समय रहे। प्रेरितों के काम यह रिकॉर्ड प्रदान करता है कि “आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया” (प्रेरितों के काम 19:10)। आधुनिक तुर्की के पश्चिमी केन्द्र भाग में रोमी प्रान्त का नाम “आसिया” था। इफ़िसुस के साथ, महत्वपूर्ण शहर, जैसे कि, सरदीस, पिरगमुन, मिलेतुस, और स्मुरना इसकी सीमा के अन्तर्गत थे। बहुत अधिक सफलता के साथ-साथ वहाँ पर पहले से ही **बहुत से विरोधी** थे। देमेत्रियुस की अगुवाई में सुनारों ने मसीहयत का विरोध किया (प्रेरितों के काम 19:24)। इफ़िसुस में होने वाली घटनाएँ प्रेरित के लिए उन घटनाओं की तुलना में अधिक खतरनाक थी जिसकी कल्पना सम्भावित रुप से उसने उस समय की थी जब वह कुरिन्थ के नाम यह पत्र लिख रहा था (देखें 2 कुरिन्थियों 1:9)।

कुरिन्थ की तुलना में पौलुस ने एक लम्बे समय तक इफ़िसुस में काम किया था (देखें प्रेरितों के काम 18:11; 20:31); फिर भी प्रेरितों के काम और कुरिन्थ के नाम लिखे गए पत्रों के बीच पाठक तुलनात्मक रुप से इफ़िसुस में कलीसिया के बारे में बहुत कम जानकारी ही प्राप्त कर पाते है। कुरिन्थ के नाम लिखे गए पत्रों के अन्तर में इफ़िसियों के नाम लिखा गया पत्र उस शहर में कलीसिया के बारे में जानकारी प्रदान करने में कुछ ही योगदान देता है। इफ़िसुस में कलीसिया के बारे में हमारी जानकारी की कमी एक ऐसा कारण है जिसके बारे में अनेक विद्वान

विश्वास करते हैं कि पौलुस ने यह पत्र लिखा जिससे कि इसे आसिया प्रान्त की सब कलीसियाओं में पहुँचा दिया जाए। "इफ़िसुस" शब्द, पत्र के साथ सम्भावित रुप से इसलिए जोड़ा गया होगा क्योंकि यह उस प्रान्त में एक मुख्य शहर था। फिर भी उच्च रुप से आदर प्राप्त हस्तलिपियों की आरम्भिक आयतों में किसी भी शहर का वर्णन नहीं किया गया है।[2]

तीमुथियुस और अपुल्लोस (16:10-12)

[10]यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है। [11]इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा देना कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उसकी बाट जोह रहा हूँ कि वह भाइयों के साथ आए। [12]भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत विनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; परन्तु उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा तब आ जाएगा।

आयत 10. मसीही लोगों को अगुवाई और नेतृत्व उपलब्ध करवाने में पौलुस अकेला नहीं था। अपने पत्र के अन्तिम शब्दों में प्रेरित ने अपने काम का और अपने कुछ सहकर्मियों की सहायता का वर्णन किया। उन लोगों के नाम बताने की प्रक्रिया में उसने कुरिन्थ के लोगों को उत्साहित किया कि वे स्थिर बनें और जिस विश्वास का अंगीकार उन लोगों ने किया था उसमें मिलावट करने वाली सब प्रकार की शिक्षाओं का विरोध करें।

पौलुस की यात्रा के साथियों में तीमुथियुस सबसे अधिक फलवन्त, सबसे अधिक विश्वासयोग्य और सबसे अधिक भरोसेमन्द व्यक्ति था (देखें फिलिप्पियों 2:19-22)। किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में पौलुस के अधिकतर पत्रों में नमस्कार कहने में वह स्थान रखता है। यह दूसरी बार है जबकि 1 कुरिन्थियों में उसका नाम देखने को मिलता है (देखें 4:17) परन्तु नमस्कार कहने में वह इस पत्र में पौलुस के साथ शामिल नहीं होता। प्रेरितों के काम उन परिस्थितियों का रिकॉर्ड प्रदान करता है जिनमें तीमुथियुस ने पौलुस के साथ काम करना आरम्भ किया। वह गलातिया का निवासी था; उपयुक्त रुप से वह लुस्त्रा शहर से था (प्रेरितों के काम 16:1, 2)।[3] बाद में वह प्रेरित के लिए प्रत्येक समय का सन्देशवाहक बन गया (देखें प्रेरितों के काम 19:22)।

इफ़िसुस में जब पौलुस काम कर रहा था उस समय तीमुथियुस के साथ होने के अवसरों का एक निश्चित क्रम पुनःनिर्मित करना कठिन है; परन्तु अगर प्रेरितों के काम 19:21 में "मकिदुनिया और अखया" की यात्रा का अन्त कुरिन्थ में होना था तो यह सम्भव है कि तीमुथियुस एक और व्यक्ति इरास्तुस के साथ था। "इरास्तुस" नाम यूनानी लोगों में बहुत कम ही देखने को मिलता था इसलिए कोई भी व्यक्ति यह अपेक्षा नहीं कर सकता कि कुरिन्थ में इस नाम के दो व्यक्ति रहे होंगे। इफ़िसुस से कुरिन्थ की ओर जाते समय जो व्यक्ति तीमुथियुस के साथ

था, सम्भावित रुप से उसका वर्णन रोमियों 16:23 में किया गया।

पौलुस इस विवरण में नहीं गया कि जब तीमुथियुस, कुरिन्थ के लोगों से मिला वह समय उसके लिए डर का समय रहा होगा, परन्तु 1 कुरिन्थियों 4:17 इसके लिए एक सुराग प्रदान करता है। प्रायः यह माना जाता है कि वह एक झुकाव के साथ वहाँ पर था (1 तीमुथियुस 4:12), जिसके कारण कुरिन्थ में प्रबल विरोधियों का सामना करना उसके लिए कठिन हो गया। सही रुप में यह साक्ष्य स्पष्ट नहीं है। जैसा कि कुरिन्थ की कलीसिया अनेक दुखदाई समस्याओं से घिरी हुई थी, तीमुथियुस जैसे एक जवान पुरुष के लिए यह कठिन था कि तुरन्त के परिवर्तन के लिए उसे कलीसिया से ही बहुतायत का सहयोग मिल जाए। पौलुस ने निश्चित रुप से यह अपेक्षा नहीं की थी कि तीमुथियुस अपने जीवन के लिए भयग्रस्त हो जाएगा परन्तु यह आवश्यक था कि अगर उसे, विवादों का न्यायकर्ता और परमेश्वर से कलीसिया को आधिकारिक वचन बाँटने वाला बनना था, तो कलीसिया से उसे सम्मान और सहयोग प्राप्त हो। पौलुस ने अपने साथी के लिए ऐसा कहा, **...क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है**।

आयत 11. स्पष्ट अनुमान यह है कि पौलुस ने यह अपेक्षा की कि तीमुथियुस के पहुँचने से पहले उसका पहला पत्र कुरिन्थ के लोगों तक पहुँच जाए और कलीसिया के द्वारा पढ़ लिया जाए। वह अब तक कुरिन्थ नहीं पहुँचा था परन्तु कलीसिया यह अपेक्षा कर सकती थी कि कुछ महीनों के बाद ही अथवा कुछ सप्ताहों के बाद ही वह वहाँ पर होगा (देखें 4:17)। सम्भव है कि 1 कुरिन्थियों को कलीसिया तक पहुँचाने के लिए तीमुथियुस सन्देशवाहक न हो। इस निवेदन के साथ कि जब तीमुथियुस कलीसिया में जाए तब वह वहाँ पर निडर रहे, पौलुस ने भाइयों को निर्देश दिया कि वे उसे आदर दें और उसके मिशन के लिए उपयुक्त व्यक्ति के रुप में सम्मान दें। **इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने** [αὐτὸν ἐξουθενήσῃ, *ओटोन एग्ज़ोथिनीसे]*, ऐसा पौलुस ने लिखा। सर्वनाम “उसे” की स्थिति उस शब्द पर बल दिए जाने को दिखाता है। इसका अर्थ यह है कि क्योंकि उसे परमेश्वर के द्वारा दिया गया मिशन प्राप्त है इसलिए अगर वह थोड़े आदर के भी योग्य है तो कलीसिया इस जवान प्रचारक के साथ तुच्छ व्यवहार करने से बचें।

पौलुस के पत्र इस प्रकार के स्मरण की बातों से भरे हुए हैं कि उसके पत्रों में बताए गए चिन्ताओं के विषय से बाहर उसके जीवन में अनेक घटनाएँ घट रही थी। उसने कुरिन्थ के लोगों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे तीमुथियुस की सुनें, आदर के साथ उससे व्यवहार करें और इसके पश्चात उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करें जिससे कि वह अपनी यात्रा पूरी कर सके। यहाँ पर जो **भाइयों** शब्द का विवरण पौलुस ने दिया यह सम्भावित रुप से वे लोग थे जो कि उसके मित्र तीमुथियुस के साथ थे अथवा जो, सम्भावित रुप से इफ़िसुस में पौलुस के साथी रहे होंगे। ऐसा लग रहा है कि पौलुस अन्य शब्दों में ऐसा कह रहा था, “मैं और मेरे साथ जो भाई हैं वे उसकी राह देख रहे हैं।” इन लोगों की पहचान करने का किसी भी प्रकार का प्रयास शुद्ध रुप से मात्र एक अनुमान ही कहलाएगा।

आयत 12. कुरिन्थ के नाम अपने पत्र के अध्याय 4 के पश्चात अपुल्लोस के विषय में, पत्र के अन्त में, कुछ कहने के लिए पौलुस के पास कुछ नहीं था जबकि प्रेरित एक अन्य मामले को स्पष्ट करना चाह रहा था। कुरिन्थ में कुछ समय बिताने के पश्चात सिकन्दरिया यहूदी मसीही व्यक्ति अपने रास्ते चला गया। अगर वह वापस इफ़िसुस की ओर लौटता तो इससे कुरिन्थ के बारे में पौलुस के साथ बातचीत करने के लिए एक अवसर उपलब्ध हो जाता। यह चाहे पौलुस की इच्छा रही हो अथवा नहीं परन्तु कुरिन्थ में स्वयं के दल के पक्ष में मतभेद देखे जा सकते थे जिसने अपुल्लोस के विरोध में पौलुस के मार्गों को कठिन बना दिया। किसी भी प्रकार के झगड़ों में शामिल होने के लिए प्रेरित ने मना कर दिया। वह चाहता था कि कुरिन्थ के लोग यह जान लें कि वे एक समान प्रभु की सेवा कर रहे थे और ऐसा वे अपने-अपने तरीके से कर रहे थे (3:5-7)।

स्पष्ट रुप से अपुल्लोस, पौलुस के अधीन काम करने वाला व्यक्ति नहीं था। पौलुस ने अपुल्लोस को कुरिन्थ में उपस्थित होने के लिए किसी प्रकार के प्रेरिताई अधिकार का प्रयोग नहीं किया। किसी प्रकार के कलीसियाई प्रबन्ध की कलीसियाई व्यवस्था भी नहीं थी। पौलुस ने मात्र यह कहा, **मैं ने उससे बहुत** [πολλά, *पोल्ला*] **विनती की है कि तुम्हारे पास आए**। सम्भावित रुप से उसके कहने का अर्थ था, "मैंने उसे बार-बार उत्साहित किया," अथवा "आग्रह करने के जितने भी गुण मेरे पास थे उन सबके साथ मैंने उसे उत्साहित किया।" कुरिन्थ की ओर जाने के लिए अपुल्लोस से जिन "भाइयों" के द्वारा बलपूर्वक आग्रह किया वे उपयुक्त रुप से स्तिफनुस, फूरतूनातुस और अखइकुस (16:17) थे जिन्होंने कुरिन्थ से पौलुस तक पत्र को पहुँचाया (7:1) और उपयुक्त रुप से उन्होंने ही पौलुस से पत्र प्राप्त कर सभा के लोगों तक उसे पहुँचाया। सम्भावित रुप से अपुल्लोस जितना हो सके उतना स्वयं को उन झगड़ों से दूर रखना चाह रहा था जिनके कारण कलीसिया में कोलाहल उत्पन्न हो रहा था। कारण कुछ भी हो, **उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की**, ऐसा पौलुस ने कहा; फिर भी उसने अपने पाठकों को यह आश्वासन दिया कि **जब अवसर पाएगा तब** अपुल्लोस **आ जाएगा**। हमें आश्चर्य हो रहा है कि यह विद्वान व्यक्ति कुरिन्थ की ओर वापस गया होगा और किस प्रकार की भूमिका, अगर कोई है तो, उसने यूनान और आसिया की कलीसियाओं में अदा की होगी।

कठिन उपदेश (16:13, 14)

13जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ। 14जो कुछ करते हो प्रेम से करो।

चार छोटे उत्साहपूर्ण उपदेशों के क्रम में पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया के लिए अपनी अभिलाषा और प्रार्थना को संक्षिप्त किया। अगर वे लोग उसके निर्देशों को मानते हैं तो इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उसके उपदेशों को सुना है

परन्तु जिन समस्याओं को प्रेरित ने सम्बोधित किया उनके साथ प्रत्येक व्यक्तिगत उपदेश को जोड़ने के परिणाम के रुप में बहुत कम फल प्राप्त होता है।

आयत 13. उसने कलीसिया से कहा की वे **जागते रहें** (γρηγορέω, *ग्रिगोरिओ)*। यह शब्द कभी-कभी प्रभु के दुबारा आगमन के सम्बन्ध में एक जागृत स्वभाव के लिए काम में लिया जाता है (मरकुस 13:35; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6) परन्तु यहाँ पौलुस के मन में दूसरे आगमन का विचार नहीं था। कभी-कभी इस शब्द का अर्थ है पूरी तरह से जागते रहना (कुलुस्सियों 4:2)। प्रेरित के अन्य उपदेशों की दृष्टि में वह इस शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा था कि वह मसीही लोगों को मतभेद, अभिमान, प्रतियोगिता, स्वयं को विशेष और दूसरों को महत्वहीन समझना और शैतान के कपट के विरुद्ध जागते रहने के लिए चेतावनी दे सके (देखें 2 कुरिन्थियों 12:20; 1 पतरस 5:8)।

विश्वास में स्थिर रहने का अर्थ है कि प्रेरिताई शिक्षा को स्थिरता के साथ पकड़े रहना - अथवा, नकारात्मक रुप से बताई गई शिक्षा से बचना, मसीही सिद्धान्त और नैतिकता के प्रति कलीसियाई भक्ति में हस्तक्षेप करने वाले ज्ञानवान लगने वाले प्रचार से बचना (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। नया नियम में इस शब्द के इसी स्थान में देखे जाने के साथ ही प्रेरित ने कुरिन्थ के मसीही लोगों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे **पुरुषार्थ करें** (ἀνδρίζομαι, *एन्ड्रिज़ोमाई)*। यह शब्द जनसमुदाय को प्रिय लगने वाले आदर्श व्यवहार के लिए एक बुलाहट के रुप में समझा जाए। उन्हें चाहिए था कि वे बच्चों के समान गड़बड़ी न फैलाएँ और न ही झगड़े करें परन्तु उनके अन्यजाति समाज में सामान्य रुप से व्याप्त मूर्तिपूजा, स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने के भाव और अन्य पापों की तुलना में वास्तविक्ता और साहस के साथ स्वयं का आकलन करें। मसीही लोगों को चाहिए था कि वे दृढ़ निश्चय और अंगीकार के साथ इस प्रकार के व्यवहार से स्वयं को मोड़ लें। **बलवन्त होओ,** पिछले उपदेशों के साथ गहरा अर्थ रखता है। शारीरिक परख के विरुद्ध खड़े होने और प्रेरिताई सिद्धान्तों को पकड़े रहने के लिए ताकत और दृढ़ता की आवश्यकता थी। मसीही जीवन के लिए आवश्यक है कि जहाँ आवश्यकता हो वहाँ पर दृढ़ता और बल के मध्य एक नाज़ुक सन्तुलन बनाए रखें और जहाँ तक हो सके उतना कोमलता और सहनशक्ति के मध्य एक नाज़ुक सन्तुलन बनाए रखें।

आयत 14. यीशु के नमूने का पालन करते हुए (उदाहरण के लिए, मरकुस 12:29-31), पौलुस ने मसीही लोगों को आश्वासन दिया कि जो कुछ भी वे कर सकते हैं अथवा बन सकते हैं, एक भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए आन्तरिक बल के रुप में अन्य लोगों से प्रेम करने में असफल न हों। प्रेरित ने अध्याय 13 में यह स्पष्ट कर दिया कि मसीही जीवन का आधारभूत बिन्दु प्रेम है। कुरिन्थ की कलीसिया की सब कठिनाइयों और समस्याओं की दृष्टि से पौलुस ने 16:13, 14 में जो उपदेश दिए वे मसीह में बढ़ने की कुंजी के रुप में दिए।

इन शब्दों के साथ 1 कुरिन्थियों इसके आरम्भ के समान नोट के साथ समाप्त होता है। 1:10 में प्रेरित ने अपने पाठकों से विनती की कि वे “सहमत” हों और

उनमें “कोई फूट न हो,” परन्तु वे “एक मन और एक ही न्याय में सम्पूर्ण किए जाएँ।” अगर हम 1:10 को पूरे पत्र के लिए एक शोध-प्रबन्ध कथन के रुप में लेते हैं तो 16:14 उस शोध-प्रबन्ध का दोहरना होगा: **जो कुछ करते हो प्रेम से करो**। इन शब्दों को श्रेष्ठ प्रकार का उपदेश कहा जा सकता है।

स्तिफनास, फूरतूनातुस, और अखइकुस (16:15-18)

**15हे भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो कि वे अखया के पहले
फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिये तैयार रहते हैं। 16इसलिये मैं तुम से
विनती करता हूँ कि ऐसों के अधीन रहो, वरन् हर एक के जो इस काम में
परिश्रमी और सहकर्मी है। 17मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के
आने से आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी घटी को पूरा किया है। 18उन्होंने
मेरी और तुम्हारी आत्मा को चैन दिया है, इसलिये ऐसों को मानो।**

आयत 15. किसी भी सभा में कुछ ऐसे लोग होंगे जो कि एक उदाहरण के रुप में अगुवाई देते हों। कुरिन्थ के मसीही लोगों के सम्मुख पौलुस, स्तिफनास के विषय में बताता है जिसे उसने स्वयं अपने हाथों से बपतिस्मा दिया (1:16)। इस परिवार के सदस्य **अखया के पहले फल हैं**, यह सुझाता है कि वे कुरिन्थ प्रदेश में पौलुस के प्रथम परिवर्तन प्राप्त लोगों में से थे। अखया, यूनानी प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में विस्तृत रोमी प्रान्त था। यह सम्पूर्ण पेलोपोन्नेस और कुरिन्थ के स्थल-संयोजक भाग के अथेने उत्तरी भाग जैसे महत्वपूर्ण शहरों को शामिल करता था। अखया और मकिदुनिया, उत्तर की ओर, आवश्यक रुप से यूनान के रोमी प्रशासनिक ज़िलों को शामिल करते थे। सीमाओं और संस्थाओं में भिन्नता सम्राट पर निर्भर करती थी। जब पौलुस ने इस शहर में भेंट की तब कुरिन्थ, अखया के लिए रोमी प्रशासन का स्थान था। स्तिफनास और उसका घराना आवश्यक रुप से सर्वप्रथम लोग नहीं थे जो कि अखया में मसीही बने (देखें प्रेरितों के काम 17:34) परन्तु वे प्रथम लोगों में से थे।

“पहला फल” यह सुझाव देता है कि स्तिफनास और उसका घराना परिवर्तन पाने के द्वारा यह संकेत देता है कि अन्य लोग भी सुसमाचार को मानें। इसी प्रकार मसीह का पुनरुत्थान और अधिक आशिषों का वायदा करता है (15:23)। आसिया प्रान्त में ऐजियन समुद्र के उस पार पौलुस अधिक निश्चित था। उसने कहा कि इस प्रान्त में “मसीह के लिए पहला परिवर्तित मनुष्य” इपैनितुस रहा है (रोमियों 16:5)। स्तिफनास के घराने के लोगों ने स्वयं को प्रस्तुत किया कि वे परमेश्वर के सेवक हैं और आरम्भ से ही उसकी कलीसिया के सेवक हैं। शहर के सब मसीही लोगों के लिए वे नमूना थे। अन्य चीज़ों के बीच पौलुस ने यह जोड़ा कि कलीसिया की एकता का मार्ग स्थिर, परमेश्वर के भय के साथ नेतृत्व है।

प्रेरिताई सिद्धान्त के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए कलीसिया के लिए यह आवश्यक है कि इसमें अनुशासन हो। प्रथम शताब्दी में कलीसियाओं को,

आधुनिक युग के समान, अनुशासित, मज़बूत और विश्वासयोग्य बनने के लिए नेतृत्व की आवश्यकता थी (16:13)। कुरिन्थ में स्तिफनास एक ऐसा पुरुष था जिसे कलीसिया दिशा-निर्देश और अगुवाई के लिए आदर्श मानती थी। वह विश्वास में जड़ पकड़े हुए था और मसीह के प्रेम के प्रति दृढ़ था। यह निश्चय करने के लिए कि सरकार एक समूह के रुप में काम करे, सैनिक और पुलिसकर्मी अस्त्रों और शस्त्रों के बल से अनुशासन लागू कर सकते हैं। ताकत के रुप में धन के प्रबन्ध के द्वारा एक महापालिका अपने आदेश का पालन करने के लिए लोगों पर दबाव डाल सकती है। कलीसियाओं में आज्ञाकारिता और समर्पण अधिक कठिन हैं। नेतृत्व का अभ्यास चरित्र और आचरण के द्वारा होता है जो भले कार्यों से उत्पन्न आदर को आकर्षित करता है।

आयत 16. कलीसिया को जिस प्रकार के लोगों का नेतृत्व करना होता है उनके विषय में 1, 2 तीमुथियुस और तितुस की पुस्तकें विस्तृत दिशा-निर्देश उपलब्ध करवाती हैं (देखें 1 तीमुथियुस 3; तितुस 1)। प्रेरितों के काम के अनुसार, पौलुस और बरनबास ने स्वयं के द्वारा कलीसियाएँ स्थापित करने के साथ ही उनमें प्राचीन ठहराए (प्रेरितों के काम 14:23)। प्रेरित ने थिस्सलुनीकियों के लोगों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे उन लोगों का सम्मान करें जो “प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं” (1 थिस्सलुनीकियों 5:12, 13)। फ़िलिप्पियों को लिखा गया पत्र, “सब पवित्र लोगों ... जिनमें अध्यक्ष और डीकन शामिल है” (फ़िलिप्पियों 1:1) को सम्बोधित करते हुए लिखा गया। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पौलुस, अधिकारिक नेतृत्व की भूमिकाओं में नियमित रुप से लोगों को नियुक्त करता था। स्तिफनास के विषय में उसका उपदेश कि, **ऐसों के अधीन रहो,** को सब कलीसियाओं में अगुवाई और नेतृत्व के लिए प्रेरित की चिन्ता के सन्दर्भ में समझा जाए।

आयत 17. यह उपयुक्त जान पड़ता है कि तीन लोगों, **स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस**, को पत्र के साथ कुरिन्थ की कलीसिया में एक प्रतिनिधि मंडल के रुप में भेजा गया जिसके बारे में 7:1 में बताया गया है। 1 कुरिन्थियों में उनके बारे में एक संक्षिप्त सूचना के अतिरिक्त कोई और जानकारी प्राप्त नहीं होती। दो बार पौलुस ने “स्तिफनास के घराने” (देखें16:15) का संकेत दिया। उसने इस घराने के सदस्यों को बपतिस्मा दिया था (1:16); अखया में उसके काम के वे प्रथम फल थे, और उन लोगों ने प्रभु की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित किया था (16:15)। स्पष्ट रुप से, “स्तिफनास” का स्तर और कलीसिया में उसका नेतृत्व, “फूरतूनातुस और अखइकुस” के तरीकों से भिन्न था। सम्भावित रुप से स्तिफनास बहुत ही धनवान पुरुष था। दूसरी तरफ़ फूरतूनातुस और अखइकुस गुलामों के लिए सामान्य नाम हुआ करते थे। “फूरतूनातुस” का अर्थ कुछ “भाग्यवान” जैसा है और अखइकुस का अर्थ है “अखया का व्यक्ति।”

पौलुस को कुरिन्थ के लोगों की चिन्ता थी। इन सन्देशवाहकों ने, जैसा कि पौलुस ने कहा, **तुम्हारी घटी को पूरा किया है**। इन शब्दों का जो भी अर्थ रहा हो परन्तु ये आर्थिक आवश्यकताएँ उपलब्ध करवाने के बारे में संकेत नहीं देते।

पौलुस ने उन लोगों के अधिकार की रक्षा की जो सुसमाचार सुनाकर अपनी जीविका चलाते हैं (9:14) परन्तु उसने कुरिन्थ की कलीसिया से आर्थिक सहायता प्राप्त करने से मना कर दिया (9:15)। भौतिक मामलों में प्रेरित, कुरिन्थ के लोगों से कोई गठबन्धन नहीं रखता था परन्तु उसका हृदय वहाँ की कलीसिया से उड़ा हुआ था। वह कुरिन्थ में होने वाले विकास के बारे में जानने के लिए और वहाँ अपने भाइयों और बहनों की शारीरिक और आत्मिक भलाई के बारे में जानने लिए बड़ी लालसा रखता था। जिस व्यक्ति ने पौलुस तक पत्र पहुँचाया उसने उसे कुछ अन्य समाचार भी पहुँचाए जिनमें कुछ अच्छे और कुछ बुरे थे।

आयत 18. पौलुस ने उन तीन लोगों के लिए कुरिन्थ की कलीसिया की प्रशंसा की क्योंकि जो पत्र पौलुस उनके साथ पुनः भेज रहा था उसके द्वारा और वे अपनी स्वयं की बुद्धि के द्वारा कलीसिया के बल और विकास का स्त्रोत बनने जा रहे थे। इन तीन लोगों ने पौलुस को **चैन** दिया और वे कुरिन्थ के लोगों को भी चैन देने जा रहे थे। यह सोचना गलत है कि कलीसियाई नेतृत्व के लिए पौलुस का नमूना पूरी तरह से "आत्मा के चलाए" स्वभाव के आधार पर था। यहाँ पर जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है यह उसी समान है जैसी हम 1 थिस्सलुनीकियों 5:12, 13 में पाते हैं। कलीसिया को चाहिए था कि वह ऐसे अगुवों की पहचान करे जो कि सुगम न्याय के साथ हों, स्थिरता, नैतिकता और सैद्धान्तिक रुप से दक्ष लोग हों।

1 कुरिन्थियों 12:28 में जिन गुणों के बारे में पौलुस ने बताया उनमें κυβερνήσεις (*कुबरनीसिस*, "प्रशासन") और ἀντιλήμψεις (*एन्टिलेमप्सिस*, "सहायताएँ") थे, जो कि अध्यक्षों (प्राचीनों) और डीकनों के लिए सम्भावित रुप से विवरणात्मक शब्द हो सकते हैं। किसी उद्देश्य की ओर बढ़ते हुए काम करने के लिए, लोगों के एक समूह को एकता के एक स्तर तक आने के लिए, नेतृत्व की आवश्यकता होती है। कलीसिया की अगुवाई में शामिल ज़िम्मेदारियों को जो लोग स्वीकार करते हैं उनको सदैव आदर और सम्मान प्राप्त होता है।

"कलीसियाओं" और "भाइयों" को नमस्कार (16:19, 20)

19आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार! 20सब भाइयों का तुम को नमस्कार। पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।

आयत 19. किसी भी प्रकार का एक व्यक्ति यह आश्चर्य करेगा कि जिस समय पौलुस ने लिखा उस समय **आसिया** में **कितनी कलीसियाएँ** रही होंगी। रोमी प्रान्त के अन्तर्गत "आसिया" था जो कि इसी नाम से आधुनिक तुर्की के पश्चिमी भाग के रुप में जाना जाता था जबकि नए नियम में जहाँ पर "आसिया" शब्द देखने को मिलता है वह रोमी प्रान्त का सन्दर्भ प्रदान करता है न कि एशिया

महाद्वीप का अथवा एशिया का। आसिया, एजियन समुद्र के पूर्व में प्रथम रोमी प्रशासनिक ज़िला था। पिरगमुन के राजा की मृत्यु के बाद यह रोमी नियन्त्रण में आ गया जिसने अपना राज्य लोगों को और सन् 133 ईसा पूर्व में रोम की राज्यसभा को अपनी वसीयत के द्वारा दे दिया। आसिया का इतिहास बहुत ही उग्र रहा है; परन्तु रोमी लोगों के द्वारा इसे फिर से संयोजित करने के दो सौ वर्ष के बाद भी आसिया, रोम को निरन्तर धन और स्त्रोत पहुँचाता रहा जो कि अन्य किसी प्रान्त की तुलना में रोम के बाद द्वितीय स्थान रखता था। इफ़िसुस, पिरगमुन, और स्मुरना मुख्य शहर थे; परन्तु जब रोमी राज्यपाल ने इस प्रान्त में अपना एक वर्ष का कार्यकाल आरम्भ किया तब नियम के अनुसार वह इफ़िसुस में जहाज़ से उतरा।

अक्विला और प्रिस्किल्ला, जिनका वर्णन पहली बार प्रेरितों के काम 18 में दिया गया है, अपने सांसारिक कार्य में और कलीसिया के कार्य में पौलुस के सहकर्मी थे। अक्विला का जन्म पुन्तुस में हुआ था (प्रेरितों के काम 18:2)। सम्भावित रुप से व्यवसाय के कारण वह और उसकी पत्नी रोम देश में चले गए थे; वे लोग वहाँ से उस समय निकाल दिए गए जब सम्राट क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दे दी थी।[4] ये जोड़ा पौलुस के साथ यात्रा करते हुए कुरिन्थ से इफ़िसुस पहुँचा (प्रेरितों के काम 18:18) जहाँ पर वे सम्भावित रुप से तब तक रहे जब तक कि यह पत्र न लिखा गया। इफ़िसुस में रहते समय वे लोग अपुल्लोस से मिले और प्रभु में उन्होंने उसे निर्देश दिए। प्रेरितों के काम का रिकॉर्ड, पौलुस के पत्रों के पूरक का काम करता है जो कि उसके पत्रों के साथ किसी प्रकार का सामंजस्य बैठाने का कोई स्पष्ट प्रयास नहीं करता।

बाद में हम अक्विला और प्रिस्किल्ला को रोम में स्वयं के घर में एक कलीसिया के साथ एकत्रित होते हुए पाते हैं (रोमियों 16:3-5)। वे लोग समर्पित मसीही लोग थे। पौलुस ने सदैव अधिक औपचारिक अक्षर, "प्रिस्का" का प्रयोग किया जबकि लूका ने "प्रिस्किल्ला" (प्रेरितों के काम 18:2, 18, 26) शब्द काम में लिया। नया नियम में इस जोड़े का नाम छः बार लिया गया जिसमें से प्रिस्किल्ला का नाम पहले चार बार आता है। हो सकता है कि ये क्रम इतना महत्वपूर्ण न लगे परन्तु यह स्पष्ट है कि प्रिस्किल्ला एक समर्पित मसीही महिला थी और प्रभु के काम में अपने पति के साथ एक पूर्णकालीन सहभागिनी थी।

आयत 20. आगे की आयत में हमें **सब भाइयों के नमस्कार** को **आसिया की कलीसियाओं से अलग नहीं समझना चाहिए**। पौलुस, शहरों के महत्व से बढ़कर सामान्य भाईचारे की भावना को आश्वस्त करने का प्रयास कर रहा था। पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करने का अभ्यास पौलुस के जगत में था (देखें रोमियों 16:16; 2 कुरिन्थियों 13:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:26; 1 पतरस 5:14), जो कि आज भी कुछ संस्कृतियों में निरन्तर देखा जा सकता है। फिर भी यह आज्ञा शास्त्र-व्याख्या से सम्बन्धित सैद्धान्तिक प्रश्न खड़े करती है। कलीसिया आज इस आज्ञा के पत्र का पालन नहीं करती जो कि संस्कृति के आधार पर निर्देश

है। हमें बताया गया है कि आधुनिक अमरीकी लोगों के लिए अच्छी प्रकार से हाथ मिलाना एक पवित्र चुम्बन के समान है। फिर कलीसिया, तर्क-वितर्क करते हुए कितना विचार करती रहेगी? बाइबल के द्वारा किसी विशिष्ट संस्कृति को दिए गए निर्देशों के विषय में हमें चाहिए कि हम उनका गलत अर्थ न निकालें।[5]

एक प्रभावशाली उपदेश (16:21, 22)

[21]मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार। [22]यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ!

आयत 21. पौलुस का स्वभाव यह था कि वह एक पत्र को लिखवाता था, फिर उसे अच्छा लिखने वाले एक व्यक्ति से जाँच करवा कर सही करता और फिर **स्वयं के हाथों से** उस पर हस्ताक्षर करता था (देखें गलातियों 6:11; कुलुस्सियों 4:18; 2 थिस्सलुनीकियों 3:17; फ़िलेमोन 19)। प्राचीन जगत में पत्रों को कभी-कभी अच्छी प्रकार से जाँचकर तैयार किया जाता था। 2 थिस्सलुनीकियों 3:17 का सुझाव यह है कलीसिया ने वे पत्र प्राप्त किए जिन्हें पौलुस के द्वारा जाँचा गया और उसकी स्वीकृति प्राप्त होने बाद प्राप्त किया जब वह वहाँ पर नहीं था। प्रेरित ने व्यक्तिगत हस्ताक्षर का प्रयोग करते हुए एक स्पष्ट चिन्ह स्थापित किया जिससे उसके पत्रों के खरेपन की पहचान की जा सके।

आयत 22. यह असामान्य बात है कि पौलुस का कोई भी पत्र किसी श्राप के साथ अथवा गम्भीर शपथ के साथ समाप्त हुआ हो (देखें रोमियों 16:17)। फिर भी, पौलुस ने कहा, **यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो**। जो व्यक्ति प्रभु से प्रेम नहीं करता वह सम्भावित रुप से मुँह से स्वीकार करने वाला ही विश्वासी रहा है अथवा सम्भावित रुप से यह वाक्यांश प्रेरित किसी ऐसे व्यक्ति के लिए कह रहा है जो कि विश्वास नहीं करता। यह देखा जा सकता है कि दोनों में से किसी भी मामले में उसने व्यक्तिगत विश्वासयोग्यता की माँग प्रकट नहीं की। पौलुस की चिन्ता यह थी कि कुरिन्थ के विश्वासी लोग प्रभु से प्यार करें। कोई भी व्यक्ति उससे यह अपेक्षा करेगा कि वह φιλέω (*फ़िलिओ*, "मैं प्रेम करता हूँ") के स्थान पर ἀγαπάω (*अगापे*, "मैं प्रेम करता हूँ") का प्रयोग करे परन्तु "प्रेम" के लिए इन दो क्रियाओं के बीच का अन्तर आवश्यकता से अधिक बल देता हुआ दिखाई देता है।

अन्तिम शब्द **मारानाथा** अरामी भाषा का शब्द है जो "हे हमारे प्रभु, आ," מָרַנָא תָא *(मारानाथा')* वाक्यांश के लिए है। यह अद्भुत बात है कि यूनानी/रोमी सन्दर्भ में अरामी भाषा का प्रयोग किया गया है। यह "आमीन" शब्द के समान लगता है जो कि आरम्भिक मसीही लोगों के द्वारा अपने पलिश्तिनी विश्वास की जड़ के प्रति एक गवाही को लिए चलता है।[6] प्रकाशितवाक्य 22:20 में इस प्रकार का वाक्यांश यूनानी रुप, ἔρχου κύριε 'Ιησοῦ (*एरखो कुरिए येसूस*, "हे प्रभु यीशु आ") में दिखाई देता है। चाहे ये शब्द यूनानी में हो अथवा इब्रानी में

फिर भी ये मात्र एक गम्भीर आशा ही नहीं बताते परन्तु एक आत्म-विश्वासी अपेक्षा को भी बताते हैं। यह वाक्यांश बोलने के द्वारा विश्वासी लोग आपस में एक-दूसरे के साथ अधिक मज़बूती से बँध जाते हैं परन्तु यह बाहर के लोगों के लिए एक अनजान बात है जिसे वे समझते नहीं हैं।

पौलुस के प्रेम का आश्वासन (16:23, 24)

23प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम पर होता रहे। 24मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब के साथ रहे। आमीन।

आयत 23. कुरिन्थ के मसीही लोगों के लिए, उन लोगों की तुलना में पौलुस ने परमेश्वर का अनुग्रह और आशिषों की चाह की जो प्रभु से प्रेम नहीं करते थे। यूनानी भाषा χάρις *(चैरिस)* की तुलना में अंग्रेज़ी भाषा में **अनुग्रह** शब्द को इसके धार्मिक अर्थ में अधिक विशेष बताया गया है। चैरिस, अनुग्रह अथवा आशिष के लिए एक सामान्य शब्द है। इसका अर्थ पौलुस के द्वारा उपयोगी बना दिया गया और विस्तृत कर दिया गया जिससे कि यीशु मसीह में परमेश्वर के द्वारा दिए गए मुफ़्त उपहार को नियुक्त किया जा सके।

आयत 24. पौलुस कुरिन्थ के लोगों के लिए मात्र यह नहीं चाहता था कि वे प्रभु की आशिषों और अनुग्रह को जानें; उसने उनके लिए अपने व्यक्तिगत स्नेह का और मसीह यीशु में उनके लिए अपने प्रेम का भी आश्वासन दिया। मसीह का प्रेम उसके लोगों के द्वारा प्रकट किया जाता है और उन्हें चाहिए कि वे एक-दूसरे से प्रेम करें और एक-दूसरे का सहयोग करें।

अनुप्रयोग

विश्वास में स्थिर रहो (16:13)

इस पुस्तक के पद 16:13 में पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को जो चार उपदेश दिए हैं वे एक समान भीतरी भाग रखते हैं। प्रेरित ने प्रेरिताई सिद्धान्त के साथ चिपके रहने के लिए और परमेश्वर के भय के साथ नैतिक जीवन जीने के प्रति चौकस रहने के लिए, स्थिर रहने के लिए और ताकत पाने और दृढ़ रहने के लिए निवेदन किया।

"जागते रहो।" जो मसीही लोग मसीह की देह के निर्माण में लगे हुए हैं वे स्वयं पर और अपने चारों ओर एक चौकस दृष्टि रखते हैं। पौलुस ने अपने पाठकों को "जागते रहने" के लिए चुनौती दी। जब एक मसीही व्यक्ति यह सोचता है कि वह मसीह में स्थिरता के साथ जड़ पकड़े हुए है - कि उसे किसी प्रकार के अंगीकार, प्रार्थना, अध्ययन अथवा आराधना की आवश्यकता नहीं है - तब वह गम्भीर खतरों का सामना करता है। पूर्व में इस पत्र में पौलुस ने कहा, "इसलिये जो समझता है, 'मैं स्थिर हूँ,' वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े" (10:12)।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक ऐसा लिखता है, "इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं, और भी मन लगाएँ, ऐसा न हो कि बहककर उन से दूर चले जाएँ" (इब्रानियों 2:1)। शरीर की लालसाओं के लिए आत्मिक सुरक्षा और आशा की अदला-बदली करना, उत्पत्ति 25:34 में थोड़ी सी मसूर की दाल के लिए एसाव के द्वारा अपने पहिलौठे के अधिकार की अदला-बदली करने से भी अधिक बुरा है।

"विश्वास में स्थिर रहो।" मसीह में बपतिस्मा (रोमियों 6:4) प्राप्त करना महत्वपूर्ण है परन्तु यह स्वर्ग में प्रवेश करने की कोई गारन्टी नहीं है। प्रेरित ने समझाया, "विश्वास में स्थिर रहो।" विश्वास के प्रति आज्ञाकारिता में सहभागी होने के लिए बपतिस्मा लिया जाता है; परन्तु जब एक व्यक्ति मसीही बन जाता है तब उसका विश्वास निरन्तर आगे बढ़ने के लिए उसे प्रत्युत्तर देता रहे। अपने विश्वास रुपी जहाज़ को डुबोने के लिए अनेक लोग हुमिनयुस और सिकन्दर के पीछे चले (1 तीमुथियुस 1:19, 20)। पौलुस की चेतावनी इस बात का स्मरण दिलाती है कि मसीही लोगों को चाहिए कि वे बाहरी चौकसी पर भी ध्यान दें। विश्वासी लोगों पर परमेश्वर का अनुग्रह, विश्वासयोग्यता और भक्ति के साथ जीवन जीने की ज़िम्मदेदारी को उनसे हटा नहीं देता।

"पुरुषार्थ करो।" मसीही लोगों में चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री, दोनों प्रकार के लिंग के लोगों से पौलुस ने निवेदन किया: "पुरुषार्थ करो।" लगभग सब संस्कृतियों में पुरुष योद्धा रहे हैं। प्राचीन जगत में किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन-निर्वाह और युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति का शारीरिक आकार और ताकत बहुत अधिक महत्व रखता था। 1 शमूएल का लेखक, शाऊल के अच्छे दिखाई देने में और उसके कद में रुचि नहीं रखता था जब उसने लिखा, "वह कंधे से सिर तक सब लोगों से लम्बा था," और "निश्चित रुप से सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं था" (1 शमूएल 10:23, 24)। शाऊल सब लोगों में सबसे ऊँचे कद का व्यक्ति था। उसमें साहस और ताकत थी। आधुनिक समय में, विशेष रुप से आगे के समय की तकनीकी के प्रयोग के साथ महिलाएँ भी सैनिक बन गई हैं। पौलुस ने सब मसीही लोगों से बलपूर्वक आग्रह किया कि वे "साहसी बनें" (NLT)। मसीह के अनुयायी होने के कारण उन सब प्रकार के सिद्धान्तों को स्वीकार न करें जो कि स्वयं को बड़ा बताए। हमें चाहिए कि हम उस सन्देश को थामें रहें जो प्रेरितों के द्वारा हमारे मध्य में प्रचार किया गया।

"बलवन्त होओ।" पौलुस ने संक्षिप्त शब्द "बलवन्त होओ," कहते हुए अपने मसीही मित्रों के सम्मुख अपने उपदेशों को समाप्त किया। शारीरिक बल, वास्तव में गुणों के लिए एक अलंकार है जिसकी आशा प्रेरित ने अपने पाठकों के लिए की कि वे इसमें बढ़ें। परीक्षा के समय प्रत्येक मसीही लोगों को चाहिए कि वे "बलवन्त बनें।" विश्वास के साथ समझौता करने वाले सिद्धान्त जब प्रस्तुत किए जाएँ तब हमें चाहिए कि हम "बलवन्त बनें।" जब हमारे लौकिक शरीर में पाप की लालसाएँ नियन्त्रण लेने का प्रयास करें, जब जीविका का घमण्ड उच्च स्थान की प्राप्ति के लिए युद्ध करने के लिए हमें धोखा दे तब हमें चाहिए कि हम

परीक्षाओं से बच सकें और "बलवन्त बनें।"

अन्य मसीही लोगों के साथ एक निकट सम्बन्ध (16:5-24)

जब पौलुस 1 कुरिन्थियों की समाप्ति के निकट आया तब उसने सहायता के लिए निवेदन किया। पौलुस को परमेश्वर ने जन्म से ही प्रेरिताई कार्य के लिए चुन लिया था (गलातियों 1:15), फिर भी उसने अपने कार्य को अकेले ही करने का प्रयास नहीं किया। सुसमाचार के प्रचारक और मिशनरी - फिर चाहे वे कितने ही गुणी क्यों न हों अथवा वे चाहे अनेक स्रोतों के साथ हों, चाहे धर्मशास्त्रों में विद्वान क्यों न हों, वे कितने ही समर्पित क्यों न हों - अगर वे चाहते हैं कि विश्वासयोग्यता के साथ मसीह की सेवा की जाए तो उन्हें चाहिए कि वे अन्य लोगों का सहयोग लें। अनेक लोग किसी मिशन पर निकल गए, जिसमें उन्होंने व्यक्तिगत उत्साह को छोड़ और किसी प्रकार के निर्देश प्राप्त नहीं किए थे वे या तो अति शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गए या फिर उन्होंने विनाशकारी निराशा का सामना किया। 1 कुरिन्थियों 16:5-9 में पौलुस ने कुरिन्थ के मसीही लोगों की सहायता और सहभागिता के लिए उस समय निवेदन किया जब वह प्रभु के द्वारा दिए गए काम को कर रहा था।

पौलुस उस मिशन के द्वारा विवश था जो मसीह ने कलीसिया को दिया था (मत्ती 28:18-20)। पूर्व में उसने कुरिन्थ के लोगों से कहा था, "यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरे लिए कुछ घमण्ड की बात नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है। यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!" (1 कुरिन्थियों 9:16)। अब भी बिना अपने पक्ष के समर्थन के, मकिदुनिया में विश्वासियों से प्राप्त होने वाले सहयोग पर उसने झुकाव रखा (प्रेरितों के काम 18:5; 2 कुरिन्थियों 11:9; फ़िलिप्पियों 4:15)। कुरिन्थ के लोगों से पौलुस किसी प्रकार का वेतन नहीं चाहता था (1 कुरिन्थियों 9:12; 2 कुरिन्थियों 12:16) परन्तु मसीह के काम को जारी रखने में सहायता के लिए उसने निवेदन किया (1 कुरिन्थियों 16:6; 2 कुरिन्थियों 1:16)। जैसा कि अनेक बार कहा गया है कि अगर मसीह का सुसमाचार संसार भर में लेकर जाना है तो इसके लिए आवश्यक है कि कोई व्यक्ति इसके लिए जाए और कोई व्यक्ति इसके लिए किसी को भेजे। पौलुस उच्च रुप से उत्साहित था; उसने यह समझ लिया कि प्रत्येक मसीही व्यक्ति ठीक उसके समान प्रभु की सेवा नहीं करेंगे। सब लोग आवश्यक रुप से अपने घर छोड़कर पैदल चलते हुए लम्बी यात्रा पर नहीं जा सकते और न ही उन्हें इस प्रकार जाना चाहिए जैसा कि पौलुस ने किया।

कुरिन्थ के नाम अपने प्रथम पत्र के समाप्ति के शब्दों में पौलुस ने कुछ कथन कहे जो कि उसके और कुरिन्थ की कलीसिया के मध्य गहरे सम्बन्धों को प्रकट करते थे। पौलुस उन लोगों के साथ समय बिताने की अभिलाषा रखता था। ये मसीही लोग उसके मित्र थे और उनमें से कुछ को उसने नाम लेकर नमस्कार किया (16:19, 20)। इन भाइयों के साथ उसने प्रेम और संगति के बन्धन में सहभागिता रखी जो कि अपेक्षाओं के परे थी। ये वे लोग थे जिन्होंने उसे उसके

मार्ग में आगे बढ़ने के लिए गति प्रदान की।

मित्रता स्थापित करने के लिए संसार में सबसे अच्छे लोग मसीही लोग हैं। निम्नलिखित व्यक्तिगत कहानी इस सच्चाई का वर्णन करती है और इस प्रकार की घटनाओं का और भी विस्तार किया जा सकता है। सन् 1985 के गर्मी के मौसम में हमारे बेटे ने खुले हृदय के ऑपरेशन के लिए मैरीलैंड में एक अस्पताल में प्रवेश किया। पहले रविवार के दिन हम वहाँ पर थे और मसीही लोगों ने अपने द्वार और हृदय हमारे लिए खोले। उन्होंने तुरन्त हमें बताया कि हमारे समान लोगों के लिए एक घर सुसज्जित किया गया है। लगभग एक महीना हम उस घर में रहे। ऑपरेशन सफल रहा और हम वापस घर की ओर रवाना हो गए। मसीही लोग किसी अन्य व्यक्ति की तुलना में उदार होते हैं। वे लोग भाइयों और बहनों की सहायता करते हैं, परन्तु वे इससे भी बढ़कर कार्य करते हैं; वे उन लोगों की भी सेवा करते हैं जो कि स्वयं के लिए प्रेम की कमी महसूस करते हैं। निश्चित रुप से मसीह के आत्मा में सहभागी लोगों से सहायता माँगने में पौलुस अन्तिम व्यक्ति नहीं था।

समाप्ति नोट्स

[1]वॉल्टर बाउर, अ ग्री*क-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द न्यु टेस्टामेन्ट एन्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3अर्ड एड., रिव. एन्ड. फ़्रेडरिक विलियम डेन्कर (शिकागो: युनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 597. [2]NASB की छपाई में एक लेख ऐसा कहता है, "तीन आरम्भिक [हस्तलिपियाँ] *इफ़िसुस में नहीं लिखी गई।"* [3]कलीसिया की प्रथम पाँच अथवा छः शताब्दियों में खड़े उन प्रसिद्ध अगुवों की एक लम्बी पंक्ति में तिमुथियुस खड़ा होता है, जो भय के साथ जीने वाली अपनी माताओं के द्वारा प्रभावित थे (2 तिमुथियुस 1:5)। डब्ल्यु. एच. सी. फ़्रेन्ड ने इस प्रकार के अनेक लोगों का वर्णन किया जिनमें तिमुथियुस, ओरिगन, सेलेरिनस और अगस्तीन शामिल थे। (डब्ल्यु. एच. सी. फ़्रेन्ड, *द राइज़ ऑफ़ क्रिश्चियेनिटी* [फ़िलादेलफ़िया: फ़ोर्टेस प्रेम, 1984], 39, 288, 322, 561.) [4]सोटोनियस *लाइफ़ ऑफ़ क्लौडियस* 25.4. [5]कोय रोपर में अध्ययन के लिए प्रायोगिक दिशानिर्देश दिए गए हैं, "हाऊ टु अप्लाई अ पैसेज टू अवर रिलिजियस प्रेक्टिसिस (2)," इन "इन्टरप्रेटिंग द स्क्रिप्चर्स, 3," *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (मार्च 2009): 35-39. [6]*डिडाके* 10.6.